एम०ए० चतुर्थ सेमेस्टर

प्रथम प्रश्न पत्र - (स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी गद्य साहित्य)

डॉ० ममता मिश्रा
सह-आचार्य - हिन्दी विभाग

विषय - हिन्दी गद्य का उद्भव एवं विकास :

हिन्दी गद्य का आविर्भाव उन्नसवीं शताब्दी के नवजागरण काल में हुआ, जब देश मध्यकालीन रूढ़ियों से मुक्त होकर नवीन पश्चिम प्रभावित सांस्कृतिक चेतना को ग्रहण कर रहा था। नये आधुनिक विचारों, नवीन शिक्षा पद्धति और नये वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रभाव हमारे सामाजिक जीवन पर भी पड़ रहा था। साहित्य में भी इनकी प्रतिध्वनि अवश्यम्भावी थी। इन सब के साथ शासन सम्बन्धी आवश्यकताएं भी गद्य के नवीन माध्यम की माँग कर रही थी। इस प्रकार उन्नसवीं शताब्दी में आधुनिकता का संवाहक होकर हिन्दी गद्य अवतरित हुआ।

हिन्दी गद्य का प्राचीनतम प्रयोग राजस्थानी और ब्रजभाषा में मिलते हैं। दसवीं शताब्दी के दानपत्रों, पट्टे परवानों, टीकाओं और अनुवादों में मिलता है। ब्रजभाषा गद्य के विकास में वल्लभ भक्तों ने योगदान दिया।

Scanned with CamScanner

इनमें विट्ठलनाथ का श्रृंगार-रस मण्डल, गोकुलनाथ जी का 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' नाभादास का 'अष्टयाम', वैकुण्ठमणि शुक्ल का 'अगहन महात्म्य' और लल्लूलाल कृत माधव-विलास विशेष उल्लेखनीय हैं।

खड़ी बोली गद्य के प्रथम दर्शन अकबर के दरबारी कवि गंग द्वारा 'चंद छंद बरनन की महिमा' और कुतुबशतक तथा स्वामी प्राणनाथ के ग्रन्थों में होते हैं किन्तु वास्तविक प्रादुर्भाव उन्नसवीं सदी में ही हुआ। उन्नसवीं शताब्दी के कुछ पूर्वही इस धारा के संकेत मिलने लगे थे। अठारहवीं शती के उत्तरार्द्ध में रामप्रसाद निरंजनी कृत 'योग वशिष्ठ', दौलतराय कृत 'पद्मपुराण' के भाषानुवाद, मथुरानाथ शुक्ल के 'पंचांग-दर्शन', मुंशी सदासुखलाल के सुखसागर, इंशा अल्लाखाँ की 'रानी केतकी की कहानी', लल्लूलाल के 'प्रेम सागर' तथा सदलमिश्र के 'नासिकेतोपाख्यान' आदि खड़ी बोली गद्य के आधुनिक प्रारम्भिक प्रयोग हैं।

खड़ीबोली गद्य को बढ़ाने का श्रेय चार लेखकों सदासुख लाल, इंशा अल्ला खाँ, लल्लूलाल और सदल मिश्र को है। इनका समय 1803 के आस-पास का है। मुंशी सदासुख लाल का गद्य कथा वाचकों जैसा पांडित्यपन लिये है। लल्लूलाल की भाषा पर ब्रज का प्रभाव है। सदलमिश्र का गद्य अपेक्षाकृत अधिक स्वच्छ था,

Scanned with CamScanner

किन्तु पूर्वी का आधिक्य उनमें है। इंशा अल्ला खाँ की भाषा में ठेठ व खड़ी बोली के दर्शन होते हैं, किन्तु विदेशी शब्दों, संस्कृत व ब्रज के शब्दों के प्रयोग न करने के बावजूद उनमें गम्भीरता की कमी है तथा पचात्मकता की गंध मिलती है।

खड़ी बोली गद्य के प्रसार में ईसाई पादरियों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने बाइबिल का खड़ीबोली में अनुवाद कराकर अपने धर्म के साथ-2 इसका भी प्रचार किया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा प्रचलित शिक्षा-योजना तथा समाचार-पत्र कला का भी इसमें योगदान है। आर्य-समाज आन्दोलन ने भी इसके प्रचार-प्रसार में सहायता दी। स्वामी दयानन्द ने अपने 'सत्यार्थ-प्रकाश' की रचना हिन्दी में की थी।

उन्नसवीं सदी के मध्य तक दो लेखकों राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' ने हिन्दी गद्य का अरबी-फारसी मिश्रित रूप प्रतिष्ठित करना चाहा तो राजा लक्ष्मण सिंह ने विशुद्ध संस्कृतनिष्ठ हिन्दी गद्य को प्रश्रय दिया। उन्होंने उर्दू, अंग्रेजी के बहुप्रचलित (बहुप्रचलित) शब्दों को भी अपनी भाषा से दूर रखा। इस प्रकार ये दोनों ही एकांगी हो गये।

Scanned with CamScanner

भारतेन्दु युग :- इस समय हिन्दी आकाश के क्षितिज पर भारतेन्दु का उदय हुआ। भारतेन्दु ने पूर्ववर्ती लेखकों की एकांगिता और भाषा सम्बन्धी दोषों से बचते हुए हिन्दी गद्य का स्वस्थ एवं सन्तुलित विकास किया। संस्कृत के सरल शब्दों के साथ अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्द उन्होंने ग्रहण किये, तद्भव व देशज तो थे ही। कहावतों और मुहावरों से उन्होंने भाषा को सजीवता प्रदान की। भारतेन्दु वस्तुतः आधुनिकता के जनक थे। उनके नेतृत्व में हिन्दी-गद्य साहित्य ने तीव्र गति प्राप्त की। इतिहास, भूगोल, विज्ञान, धर्म, पुराण, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध, पुरातत्व आदि अनेक विषयों की ओर उन्हीं की प्रेरणा से हिन्दी लेखक प्रेरित हुए। इस काल के लेखकों में श्री निवास दास, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, रामकृष्ण दास, कार्तिक प्रसाद खत्री, राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' आदि प्रमुख थे।

द्विवेदी युग :- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के बाद जिस व्यक्ति ने हिन्दी गद्य के निर्माण व प्रसार के लिए सर्वाधिक स्तुत्य कार्य किया वे पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी थे। हिन्दी पत्रिका 'सरस्वती' का प्रकाशन हिन्दी जगत की महत्वपूर्ण घटना है। इसके सम्पादक द्विवेदी जी ने हिन्दी के परिमार्जन व स्तरीकरण

का महान कार्य किया। उनकी प्रेरणा से ललित एवं उपयोगी दोनों प्रकार के साहित्य की रचना हुई। भाषा के शब्द भण्डार की वृद्धि के साथ उसके अभिव्यंजना शक्ति में वृद्धि हुई। विविध प्रकार की भाषा-शैलियों के जन्म के साथ गद्य के विविध रूपों का विकास हुआ। प्रेमचन्द, प्रसाद, बालमुकुन्द गुप्त, पद्मसिंह शर्मा, श्यामसुन्दर दास एवं रामचन्द्र शुक्ल जैसे लेखक इसी युग की देन हैं। निबन्ध लेखकों में पूर्णसिंह आदि भी महत्वपूर्ण हैं। रामचन्द्र शुक्ल एवं श्यामसुन्दर दास आदि ने आलोचना के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किया। उपन्यासकारों में गोपालराम गहमरी, वृन्दावन लाल वर्मा विश्वम्भर कौशिक तथा चतुरसेन शास्त्री आदि प्रमुख हैं।

कहानी का तो जन्म ही 'सरस्वती' से हुआ। सर्वप्रथम अंग्रेजी एवं संस्कृत की प्रसिद्ध कहानी का रूपान्तर सरस्वती में प्रकाशित हुआ। धीरे-२ मौलिक घटना प्रधान, वातावरण प्रधान, भावना प्रधान कहानियाँ सामने आयी। प्रेमचन्द, प्रसाद, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, कौशिक और सुदर्शन आदि इस युग के प्रसिद्ध कहानीकार हैं। प्रेमचन्द के उत्तराधिकारियों में जैनेन्द्र कुमार, उग्र, अज्ञेय, भगवती प्रसाद बाजपेयी, भगवती चरण वर्मा, राहुल सांस्कृत्यायन, यशपाल इलाचन्द जोशी, अमृतलाल नागर स्मरणीय हैं।

पत्र-पत्रिकाओं में सरस्वती के अतिरिक्त 'नागरी प्रचारिणी सभा', 'इन्दु', 'माधुरी', 'मर्यादा', 'सुधा', 'जागरण', 'हंस', 'प्रभा', 'कर्मवीर', 'विशालभारत' आदि ने भी हिन्दी साहित्य के सर्वतोमुखी विकास में बड़ी भूमिका अदा की है।

भारतेन्दु के बाद नाटक के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान है। उनके नाटकों में देश के प्राचीन गौरव के चित्र तथा संस्कृति-सभ्यता व राष्ट्रप्रेम के गहरे रंग हैं। नाटककारों में लक्ष्मीनारायण मिश्र, हरिकृष्ण 'प्रेमी', रामकुमार वर्मा, सेठ गोविन्द दास, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क, आदि उल्लेखनीय हैं।

छायावादी युग :— छायावादी युग में हिन्दी-साहित्य में हृदय की निगूढ़तम वृत्तियों को व्यक्त करने की क्षमता, लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता एवं वक्रतापूर्ण स्वरूपों का विकास हुआ। प्रसाद, महादेवी, निराला आदि ने अपने काव्य-ग्रन्थों की भूमिकाओं में एक नवीन आकर्षक गद्य का स्वरूप सामने रखा। इसी युग में वियोगीहरि, राय कृष्ण दास, माखनलाल चतुर्वेदी के भावुकता प्रधान गद्य के दर्शन हुए।

समालोचना के क्षेत्र में नन्ददुलारे वाजपेयी, हजारीप्रसाद द्विवेदी, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ० नगेन्द्र विशेष

Scanned with CamScanner

उल्लेखनीय है। परवर्ती इतिहास लेखकों में राजकुमार वर्मा, लक्ष्मीशंकर वर्ष्णेय, डॉ० मोहन अवस्थी तथा गणपतिचन्द्र गुप्त प्रमुख है।

प्रगतिवादी युग :- इसके बाद सहज, व्यवहारिक व अलंकार विहीन गद्य की रचना प्रतिवाद के प्रभाव से हुई। डॉ० रामविलास शर्मा, शिवनन्दन सिंह चौहान, प्रकाशचन्द्र गुप्त आदि इस युग के प्रमुख लेखक हैं। रेखाचित्र व संस्मरण लेखकों में महादेवी वर्मा, बनारसी झा उदि मुख्य हैं। आत्म कथाओं में अमृतलाल का 'कलम का सिपाही' और रामविलास शर्मा की 'निराला' की साहित्य साधना उत्कृष्ट जीवन चरित है। उग्र की 'अपनी खबर' व बच्चन की 'क्या भूलूं क्या याद करूं' लोकप्रिय आत्म कथाएँ हैं।

आज निबन्ध, नाटक, एकांकी, कहानी, उपन्यास आदि के अतिरिक्त डायरी, संस्मरण, रिपोतार्ज, फैण्टेसी, रेडियो नाटक आदि कितनी ही नयी गद्य की विधाएँ प्रचलित है। इनके अतिरिक्त विभिन्न विश्वविद्यालयों में जो शोध-प्रबन्ध निकल रहे हैं उनमें वैज्ञानिक विवेचन, विश्लेषण तथा मूल्यांकन के लिये पूर्ण सक्षम हिन्दी गद्य का स्वरूप विकसित हो रहा है।

Scanned with CamScanner